Journal of Emerging Trends and Novel Research
JETNR.ORG | ISSN : 2984-9276
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महिलाओं के शैक्षिक, सामाजिक एवं राजनीतिक सशक्तीकरण में महिला स्वयं सहायता समूहों (SHGs) की भूमिका (जनपद बागेश्वर के विशेष सन्दर्भ में)

***विपिन चन्द्र टम्टा**
शोध छात्र
मोती राम बाबू राम राजकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, हल्द्वानी

****अलका आर्या**
सहायक प्राध्यापक
शिक्षा शास्त्र विभाग
राजकीय महाविद्यालय पाटी, चम्पावत

सारांशः– भारत में पंचायती राज व्यवस्था और महिला सशक्तिकरण के बीच गहरा संबंध है। स्वयं सहायता समूह (Self Help Groups– SHGs) ग्रामीण महिलाओं के शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम बने हैं। उत्तराखंड के बागेश्वर जनपद में महिलाओं की पंचायत राजनीति में भागीदारी पिछले वर्षों में उल्लेखनीय रूप से बढ़ी है। इस शोध पत्र का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं की राजनीतिक चेतना, नेतृत्व क्षमता और पंचायत स्तर की निर्णय प्रक्रिया में उनकी भागीदारी को किस प्रकार प्रभावित किया है। अध्ययन में द्वितीयक स्रोतों अप्रकाशित शोध ग्रन्थों, शोध पत्रों, शोध आलेखों, बेबसाइटों तथा ग्रामीण विकास मंत्रालय की रिपोर्टों आदि का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं को आर्थिक आत्मनिर्भरता के साथ–साथ शैक्षिक विकास, सामाजिक प्रतिष्ठा और राजनीतिक पहचान प्रदान करने में महत्पूर्ण भूमिका निभायी है। अर्थात यह कहना उचित ही होगा कि महिलाओं के शैक्षिक, सामाजिक एवं राजनीतिक सशक्तीकरण में महिला स्वयं सहायता समूहों (SHGs) की भूमिका सकारात्मक रही है।

मुख्य शब्दः पंचायत राजनीति, स्वयं सहायता समूह, बागेश्वर, ग्रामीण विकास, पंचायती राज आदि.

प्रस्तावनाः– भारतीय ग्रामीण समाज में महिलाओं की भूमिका परंपरागत रूप से घरेलू कार्यों तक सीमित रही है। किंतु 73वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 के बाद पंचायतों में महिलाओं को आरक्षण मिलने से ग्रामीण राजनीति में उनकी भागीदारी बढ़ी। दूसरी ओर स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं को आर्थिक रूप से संगठित कर उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न किया। बागेश्वर जनपद पर्वतीय एवं ग्रामीण क्षेत्र होने के कारण यहा की अधिकांश महिलाएँ कृषिगत कार्यो में संलग्न है इन क्षेत्रों में महिलाओं की सामाजिक भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। जल, जंगल और जमीन से जुड़े कार्यों में महिलाओं की सक्रियता पहले से अधिक रही है, किंतु राजनीतिक भागीदारी सीमित थी। स्वयं सहायता समूहों के विस्तार ने महिलाओं को सामाजिक नेतृत्व तथा पंचायत चुनावों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। यह शोध पत्र बागेश्वर जनपद में महिला स्वयं सहायता समूहों और पंचायत राजनीति के अंतर्संबंध एवं महिला सशक्तीकरण में महिला स्वयं सहायता समूहों (SHGs) की भूमिका का अध्ययन प्रस्तुत करता है।

अध्ययन के उद्देश्यः–

- जनपद बागेश्वर में महिला स्वयं सहायता समूहों की स्थितियों का अध्ययन करना।
- स्वयं सहायता समूहों द्वारा महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण पर पड़े प्रभाव का का अध्ययन करना
- पंचायत राजनीति में महिलाओं की भागीदारी का विश्लेषण का अध्ययन करना।
- पंचायत स्तर पर महिलाओं के समक्ष आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना।

शोध प्रविधिः यह शोध कार्य वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है, जो पूरी तरह द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। द्वितीयक आकड़ों को शोध पत्रों, पुस्तकों, कार्यालयी अभिलेखों, समाचार पत्रों तथा वेबसाइटों के माध्यम से एकत्र कर विश्लेषण किया गया हैं।

स्वयं सहायता समूह की अवधारणाः– स्वयं सहायता समूह ऐसे छोटे समूह होते हैं जिनमें सामान्यतः 10 से 20 महिलाएँ शामिल होती हैं। ये महिलाएँ नियमित बचत करती हैं और सामूहिक रूप से आर्थिक गतिविधियाँ संचालित करती हैं। भारत में SHG आंदोलन को विशेष गति राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन तथा NABARD की योजनाओं से मिली। इन समूहों ने महिलाओं को केवल आर्थिक ही नहीं बल्कि सामाजिक और राजनीतिक रूप से भी सशक्त बनाया।

शशि पाण्डेय ने अपने शोध पत्र में कहा स्वंय सहायता समूह एक ऐसा माध्यम है जिसकी सहायता से महिलाओं ने एक नई पहचान बनाई है। इसके साथ ही स्वंय सहायता समूह ने समूह की महिलाओं को अन्य महिलाओं के साथ अपने सम्बन्धों को मजबूत करने तथा एक दूसरे की मदद करते हुए अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने मे विशेष योगदान दिया है। अब तक हुए विभिन्न प्रकार के अध्ययन इस बात को इंगित करते है कि समूह बनने के बाद तथा इसकी सदस्य बनने के बाद महिलाओं की सामाजिक पूंजी में वृद्वि हुई है।

स्व–सहायता समूह लगभग एक जैसी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति वाले ऐसे ग्रामीण निर्धनों का एक समूह होता हैं। जो स्वेच्छा से संगठित होते हैं, नियमित रूप से थोड़ी–थोड़ी राषि बचाकर सामूहिक निधि में जमा करते हैं, और इस राशि का उपयोग अपनी आकस्मिक आवष्यकताओं की पूर्ति के लिए आपसी लेन–देन द्वारा करते हैं। समूह के सदस्य हफ्ता–15 दिन अथवा महीने में एक बार बैठक करके उसमें विभिन्न विषयों पर चर्चा कर एक दूसरे की कठिनाई का समाधान ढूढ़ते हैं। बैठक के दौरान ही बचत राशि जमा की जाती है तथा ऋण का लेन–देन किया जाता है।

जनपद बागेश्वर में महिला स्वयं सहायता समूहों की स्थितिः– बागेश्वर जनपद में अनेक स्वयं सहायता समूह आजीविका, डेयरी, हस्तशिल्प, मशरूम उत्पादन, जैविक खेती तथा लघु उद्योगों से जुड़े हुए हैं। पर्वतीय क्षेत्र होने के कारण महिलाओं की सामुदायिक सहभागिता यहाँ अधिक दिखाई देती है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं को आर्थिक आत्मनिर्भरता, बैंकिंग सेवाओं तक पहुँच, सामूहिक निर्णय क्षमता का विकास, सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता, नेतृत्व कौशल का विकास आदि के रूप सोच विकसित करने का कार्य किया है। साथ ही इन समूहों की बैठकों ने महिलाओं को सार्वजनिक रूप से बोलने और निर्णय लेने का अवसर प्रदान किया, जिससे पंचायत राजनीति में उनकी रुचि बढ़ी। वे समाज में खुलकर बिना हिचहिचाहट के अपनी बात को रखने में सहल महसूस करती है।

तालिका संख्या –01
उत्तराखण्ड में जनपदवार में एचएसजी की स्थिति (2025–26)

क्र.सं.	जनपद	विकासखण्डों की संख्या	विकासखण्डों की संख्या जहाँ एसएचजी शुरू हो चुके है	एसएचजी (SHG) की कुल संख्या	5 से कम सदस्यों वाले एसएचजी	20 से अधिक सदस्यों वाले एसएचजी
1.	उत्तरकाशी	6	6	5,155	72	1
2.	देहरादून	6	6	4,015	64	11
3.	हरिद्वार	6	6	5,622	89	37
4.	चमोली	9	9	5,775	73	4
5.	पौढ़ी गढ़वाल	15	15	7,195	113	3
6.	रूद्रप्रयाग	3	3	2,453	48	1
7.	अल्मोड़ा	11	11	6,388	46	7
8.	नैनीताल	8	8	5,180	47	4
9.	ऊधमसिहनगर	7	7	7,890	35	25
10.	चम्पावत	4	4	2,406	37	4
11.	पिथौरागढ़	8	8	5,114	59	1
12.	बागेश्वर	3	3	2,969	15	0
13.	दिहरी गढ़वाल	9	9	6,078	59	2
योग		**95**	**95**	**66,240**	**757**	**100**

स्रोतः https://nrlm.gov.in

उपरोक्त तालिका संख्या 01 से स्पष्ट होता है कि उत्तराखंड राज्य में 2025–26 में कुल एसएचजी की संख्या 66,240 हो चुकी है जिसमें पांच सदस्य से कम वाले SHGs की संख्या 757 तथा 20 से अधिक सदस्यों वाले एसएचजी की संख्या 100 है। आकड़े बताते है कि अभी भी SHGs में उतना वृद्वि नहीं हुई जितनी होनी चाहिए थी। तः यह कहना उचित ही होगा कि इन SHGs महिलाओं इससे रोजगार भी प्राप्त हुआ है तथा महिलाएं सशक्त हो रही हैं। जनपद बागेश्वर में 2025–26 में कुल एसएचजी की संख्या 2969 हो चुकी है जिसमें पांच सदस्य से कम वाले SHGs की संख्या 15 तथा 20 से अधिक सदस्यों वाले एसएचजी की संख्या शून्य है। अर्थात बागेश्वर जनपद में 20 अ धिक सदस्य संख्या वाले SHGs की संख्या अत्यन्त न्यून है जो काफी चिन्ता का विषय है इस पर सरकार का इस क्षेत्र में महिलाओं को जागरूक करना होगा, तभी इसका फायदा मिल सकता है।

पंचायत राजनीति में महिलाओं की भागीदारीः– 73वें संविधान संशोधन के बाद पंचायतों में महिलाओं के लिए आरक्षण सुनिश्चित किया गया। उत्तराखंड में पंचायत स्तर पर महिलाओं को 50 प्रतिशत तक आरक्षण दिया गया है। बागेश्वर जनपद में ग्राम प्रधान, क्षेत्र पंचायत सदस्य तथा जिला पंचायत सदस्य के रूप में महिलाओं की भागीदारी निरंतर बढ़ रही है। स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाएँ पंचायत चुनावों में अधिक सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं क्योंकि उनमें संगठनात्मक अनुभव तथा सामाजिक संपर्क पहले से विकसित हो चुका होता है। महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के प्रमुख आयामों के अन्तर्गत पंचायत चुनाव लड़ना, ग्राम सभा में सक्रिय उपस्थिति, विकास योजनाओं की निगरानी, सामाजिक मुद्दों शिक्षा, स्वास्थ्य की पहल, तथा सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में सहयोग आदि को शामिल किया जा सकता है।

स्वयं सहायता समूह और राजनीतिक सशक्तिकरणः– स्वयं सहायता समूह और राजनीतिक सशक्तिकरण को निम्न बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता है।

- **महिलाओं में नेतृत्व क्षमता का विकास–** स्वयं सहायता समूह की बैठकों में महिलाएँ वित्तीय प्रबंधन, अभिलेख संधारण तथा सामूहिक निर्णय लेना सीखती हैं जो उन्हें पंचायत नेतृत्व में सहायता प्रदान करती है।
- **महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता में वृद्धिः–** आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर महिला राजनीतिक निर्णय लेने में अधिक स्वतंत्र होती है।
- **स्वयं सहायता समूह द्वारा सामूहिक समर्थनः–** चुनावों के दौरान स्वयं सहायता समूह महिलाओं को सामाजिक और नैतिक समर्थन प्रदान करते हैं।
- **महिलाओं में सामाजिक जागरूकता में वृद्धिः–** SHGs से जुड़ी महिलाओं में शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण तथा घरेलू हिंसा जैसे विषयों पर जागरूकता आई है तथा समाज में इनकी महत्ता बढ़ने के साथ साथ अनुकूलन करने में भी मदद मिलती है।

महिलाओं के समक्ष आने वाली प्रमुख चुनौतियाँः– अध्ययन क्षेत्र पर्वतीय होने के कारण यहॉ पर को अनेक समस्यायों का सामना करना पड़ता है। जैसे पितृसत्तात्मक मानसिकता, शिक्षा एवं राजनीतिक प्रशिक्षण का अभाव, आर्थिक संसाधनों की कमी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित राजनीतिक अवसर आदि। जनपद बागेश्वर जनपद की भौगोलिक स्थिति पर्वतीय होने के कारण यहॉ की महिलाओं को संचार और परिवहन संबंधी कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है।

निष्कर्ष एवं सुझावः– जनपद बागेश्वर में स्वयं सहायता समूह ने महिलाओं की शैक्षिक, राजनीतिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है इन समूहों के माध्यम से महिलाओं में आत्मविश्वास में वृद्धि, जागरूकता नेतृत्व क्षमता तथा निर्णय लेने की योग्यता सम्बन्धी गुणों का विकास हुआ है। स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाएं समाज में खुलकर अपने विचार रखती है जिस कारण सामाजिक और राजनीतिक रूप से अधिक सक्रिय पाई गई है इन समूहों के माध्यम से महिलाएं ग्रामीण विकास में भूमिका निभाने के साथ–साथ आत्मनिर्भर हो रही है अर्थात इन स्वयं सहायता समूह ने महिलाओं को समग्र सशक्तीकरण की ओर अग्रसर किया है, परंतु अभी भी बहुत कम महिलाएं ही इसे जुड़ पाई है इनका प्रचार–प्रसार सही से हो तो निश्चय ही स्थानीय स्तर पर स्वरोजगार की अवसर उत्पन्न होने के साथ साथ महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि होगी और महिलाएं निश्चत ही अपने कर्तव्यों एवं अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक होगी, इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि महिलाओं के सतत विकास एवं समावेशी विकास हेतु स्वयं सहायता समूह को और अधिक सुदृढ़ बनाना होगा, जिस हेतु अधिक संस्थागत समर्थन, प्रशिक्षण व संसाधन उपलब्ध करने होंगे तभी यह प्रत्यय 100 प्रतिशत सफलता की ओर अग्रसर होगा।

यह कहना भी उचित ही होगा महिला स्वयं सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम बन चुके हैं। बागेश्वर जनपद में SHG आंदोलन ने महिलाओं में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक चेतना का विकास किया है। पंचायत राजनीति में उनकी बढ़ती भागीदारी ग्रामीण लोकतंत्र को अधिक समावेशी बना रही है। हालाँकि चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं, फिर भी यह कहा जा सकता है कि स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं को "लाभार्थी" से "निर्णयकर्ता" बनने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भविष्य में यदि प्रशिक्षण, शिक्षा और संस्थागत सहयोग को मजबूत किया जाए, तो महिलाएँ पंचायत राजनीति में और अधिक प्रभावशाली भूमिका निभा सकती हैं। महिलाओं को शैक्षिक जागरूकता को बढ़ाया जाये तथा महिलाओं हेतु राजनीतिक प्रशिक्षण कार्यक्रम

संचालित हो, ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं हेतु शिक्षा और डिजिटल साक्षरता को महत्व दिया जाये तथा पंचायत प्रतिनिधियों के लिए नेतृत्व विकास कार्यशालाएँ आयोजित की जाये तो निश्चय ही महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा मिल सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. पाण्डेय, शशि (2016): स्वयं सहायता समूह, लघु ऋण एवं महिला सशक्तिकरण–एक अध्ययन, International Journal of Advance and social sciences ,पृ.सं. 64

2. कुमार देवेन्द्र, अब्दुल सत्तार एवं गैंद दास मानिकपुरी (2021): ग्रामीण महिला स्वंय सहायता समूह में कार्यरत् निरक्षर एवं साक्षर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने एवं नेतृत्व करने की क्षमता के विकास में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन (रायपुर जिले के विशेष संदर्भ में) Vol-09, Issue-01 पृ.सं. 61

3. https://nrlm.gov.in

4. https://bageshwar.nic.in

5. पटेल, सीमा (2024): भारतीय ग्रामीण विकास में स्व–सहायता समूह का योगदान–एक अध्ययन (रीवा जिले के विशेष संदर्भ में) Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal, vol- 7, Issue 6 पृ.सं. 47–48

6. दत्ता एण्ड सुन्दरम् भारतीय अर्थव्यवस्था :एस0 चन्द एण्ड कम्पनी लि0 नई दिल्ली।

7. श्रीवास्तव ए0के0 (2022): स्वंय सहायता समूह एवं महिला सशक्तीकरण, JETIR, November 2022, Volume 9, Issue 11.

8. गुप्ता एवं एस0, स्वयं सहायता समूह के द्वारा ग्रामीण भारत का विकास, कुरुक्षेत्र, जुलाई 2013, पृ0सं0 24